

वृक्तुं नड्या

वृक्तुं नड्या

वृक्तुं नड्या

वृक्तुं नड्या

वृक्तुं नड्या

वृक्तुं न्या

वृक्तुं नया

विक्तुं नया

विक्त

रोर-सूर-द्यर-वह्य-द्युद्य-वर्शेद-द्ययःग्रीय

ริสาร์สังเสิสาราสุมมามาณาร์ทั้งเสาราสูาสูราสุงเริสามิราราสุดาชังทุ ราสาร์สาร์สามาสมมาสาร์ทั้งเสาราสูาสู่ราสุงเริสามิราราสุดาชังทุ

## नकु निवेदे के मायेग्राय के माया गुन नियु या माया या या विवेदे के मायेग्राय के माया या विवेद के मायेग्राय के माया या विवेद के

ने या यहीर नक्का निवेदे के ना निहें रान या ना शुर्या र्षेत्र यकी निहें शानि है शानि सा शुर्या यशन्दर्भे अङ्गान्ते विदाङ्गाया श्रेष्याया । या सुष्याया चर्त्यस्त्र मुण्यायिस्य स्त्रायन्त्र स वक्कर्ना र्स्तिम्भायविष्ठम्यम्त्याये क्रुन्येम् वरेव व्यव्यायून्य विष्ठाव्याये व्यव्याये स्थाप्ता विष्ठा <u> अर अर से म्हे पर दे प्रित्र मिलेवा अपदे सुमा माध्य अर्क्च मा श्री व श्री सुमा सुमा अर्थ पा दर</u> য়ৢয়ৢ৽য়৾ৼ৽য়ৢ৽ৢৢঢ়ৼ৽ৢঢ়য়ৼ৽য়৾৽ঢ়৾ঀ৽য়ৢ৽ঢ়ৢৢঢ়ৢ৽য়৾ৼ৽য়৾৽য়ৢয়৽য়৽ৼৢয়৽য়ৢয়৽য়ৢয়৽য়৽য়ৢয়৽য়৽ नर्गेन्यदे स्ट्रेन्न् अर्द्दे केत्र सं नव्या यदे स्ट्रेन्न् नेव्या येत्र स्ट्रेन्न् नव्या यदे स्ट्रा व्या या य न्तुः र्वेगः हुः गानुगार्या स्पन्या सन्यः न्रमः यहं गार्यः । स्रवेदुः स्त्रः यः युः नन्नि ने वेदः यगायार्वेदार्वेदशायदे नतुन्न्यरार्थे। यह नार्वे त्यासुनार्वेदे नतुन् सेरार्थे। गुनार्वे त्यायके नन्गा मी'नर्र्वन्यामें। मानुमार्यानह्रव्येर्थाययया यहेर्यायाययानुसायायर्त्वासुमार्याचेर्यासुमार्थाः नश्रूवामानर्गेत्। स्रमासंविषातु प्रत्रुवास्त्रव्यास्यासे स्रोप्यास्यास्यासे स्रोत्यामी स्राप्तासे स्रोतास्योत र्देन:य:बे:बेंदि:ब्र्या खुन:बन:वी:बेग । बु:हेग:वी:ग्रून:या नून:नुबन:ब्री:ब्रे। अर्वेव:वुदे:बें। यग:य: ग्रथम् वार्षेत्र वार्षेत्र सन्दर्भ म्हाराम्यमः बह्याम्येत्र सम्बन्धान्यमः सुन्न स यहवार्या विरावे विरावे विराव विवा । यह यह वा की अवसार वा सुवा के वा वा की से हर हु की वा वा से हरे हेराष्ट्रारे नुश्रात्रशसूङ्क नमु ग्रुप्ति निवासी देवे भ्रीता सम्मानि निवासी व्यापन्य स्वर्धा स्वर्

## मुत्रअविदेखन्यानहत्र्र्म्रिन्नेना सेन्निल्य

कार्से स्वाद्दान्त्व व्याप्त स्वाद्दान्त्व स्वाद्दान्त स्वाद्दान स्

नेन्सुः स्तुः स्तुः स्तुः स्तुः स्तुः स्वा अष्यहः प्याः सहः प्याः हैं। ने स्वायः यव निश्व मंद्री में विश्व में विश्व में विश्व महित निश्व में विश्व महिता नुःसः भुर्हे १ हैं दः यं १ द तुः मुद्दा हैं दः यदे ददः यश सूद हे ना ने श हैं । हेवे अपावि द्वारा गुरस्य देशे रे दिर वडश धवे द्वश शुःश्वर्के वाश धहुः वन्यायानमुन्यवे हो वन्यो के के वर्षे वमुन्यीयान ने वाया प्रवे ने वर्षे केदे वि: प्यर्थ निरक्तु के नदे सेर र् सें व या अवसा से र न्यू मु या से सू यर्गियारोरेर्यर्रे साक्ष्यु व्यापित्रे वा श्वर्मायित्र राम्य प्रस्केता श्रेत ८८। गर्षेव्यायक्यायवगामी स्ट्रेट्य पर्ट्य स्थापाट प्रदेख्ट प्रेचेट नश्रूययामाञ्चाता केया में या न्यूयया में या निवास के स्वाप्त विकास के स्वाप्त विकास के स्वाप्त के स्वाप्त के स गिरेशप्राप्ता न्ये मुन्यवर्धि नमुन् दुश्य नमुन्या व्ययः हे हे दे भ्रेष गुर-वीश-नत्वाशन। भुदे-वाधश-वाधित-तु-भू-रेदे-तु-दर्शेदु-दवाय-ग्री-नु'य'र्क्षद्रअ'रा'त्र'। नकु'र्नुद्र'य'र्सेग्रय'रार्यात्र्यार्थ'त्र'र्ह्र'य्यर'र्ह्रेग्रय' वर्षायर्केन्या क्षेत्रात्र्या स्रोत्रात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्या वर्षाम्बर्धान्ता अववानर्भूमान् अपावकान्त्री नुमासुवाका वित्रास्त्रायायायाये केंग्राया प्रायय वित्राया वित्राया वित्राया केंग्रिस्तु थे न्यान्ग्रीयायिन् ग्री खुर्ळि न्यान्या पुरसे न्यान्या न्यायवे र्ळे या क्षेत्र नवे नक्ष्र श्रुद्र पो ने शर्म दे कें ना शर्द्र न तक्षा रा है। अर्दे र त द में त

यक्ष्याःश्चिन्। वितः यस्य प्रतः स्याप्ति । स्यापति । स्यापति

यास्याक्षा अवार्ष्या विवाद्या विवाद्या विवाद्या विवाद्या द्याःविवस्तर्दरः वरुषः हे या नेवाषः शुःवार्षेत्य। । श्रिवाषः दुषः ग्रावः वावषः बेशमन्या सर्केन क्षेत्र कु सर्के ते न्त्र संस्थान व्याय स्था प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प्राप्त प वर्ते त्यः व्याया वर्ते वर्ते । विययवया दे श्रेन् वर्ते साथ्य नत्याया शु यार्श्वा । भ्राप्त मासायापे देव विश्वात्व स्वा देव मा हे से देव मासीयाया न इते वहेगा हेन न विश्वायया क्या न मान मान विवाय स्वाय सके न पर न्त्री विश्वायदेवर्व्य देव देवश अर्केन्य इस्त के निष्य के स्याश्वरमा र्हेट्रायदेर्ट्टरायकाः अर्थे यकार्दे कर्षे के दे रेहेट्रायद्या निरक्ति के नः इसराग्री दरः र् अॅं दिन र् ल्यायया गुरः नवे सर्वे र हरा इसरा द्रिया निट्रिंग्यायासेट्राय्यसम्बद्धा दे नविवात् यादी सही हुनी खुन्यें नी मही वैन्धे है। नही हुना नही याङ्की र र श श्रुक्ष हुं वेश सदे नर वेब की शनक्ष र र र व व स्था सकें नममासेन्त्रा ।सर्केन्प्पॅन्द्रेन्थ्रेन्प्पॅन्यन्ता । ननमामीम्यास्यः नन्ययापदी क्रियानार्ययाद्वायापदीया क्रियमान्य रादे किंग्या दिया के राज्य र विद्या स्था र विद्या र विद्य श्रेयाचेत्रपदे। श्चित्रस्यश्रार्थे स्यान्यान्याच्याच्याच्याः निम्नानिक्क द्वे सुद्धा देव केव प्रवत्ती कुल में वै दु हा विमानवमा त्वास व्याधी सुन्यान्त्रयान्य । विष्यमान् सुन्यान्य सुन्यान्य सुन्यान्य ग्रीशासकेंद्र विदायदेरायोवरायें देव केवाग्री विश्वर्शन्म मुलाश्चराश्चरायन्त्राया नर्भून्य ग्रुवि यादा के मिदाया है अपार्के में विव निव स्वाय हैं ग महेशन्म अर्वे दिस्य शहे के ख्दाया विश्वस्य स्त्रीं मामश्यन्म स्त्रा ह्यर्देशःयः त्रस्य रुद्धा विश्वायम् सर्केनाः तृत्रः प्रसाधुनाः पर्कयः विश्व वर्देन कवा अपने सूर ने अपने वा ग्रुट कुन के न में राम से विकास के नर श दे वयमहिंरमा असी न्यानयहमा युः नुःसयम् मुह्मा सूरिः परिः हराययः नुःययः रेव से के वे क्षेत्र पारमा निरक्ता के नवे वर त्र के वित्र त्र व्यापमा हुर नवे महिरसास्यान् मुद्रानवे खुरह्या शु मुद्रा औं अपूर्त्री व्यनम्बर्धा मी में ग्रैभागक्षण भे गु र तु र इ र है अद अप र रे खू र भे रे न ये ह न वि वि वि दि रे मिं.हे। बेशत्वय्यश्वाश्वाययत्यत्ये क्षे.यी.दी.वी.दी.वी.ची.ची.की.का.का.का.ची.की. राष्ट्री अंग्राम में भारती विया वर्षा में राम में प्रतार के विषय वर्षा वर्षा या में रा यर.र्नेग कियायमायर्रे.यर्ट्साय्रेटाक्यामरमाक्रिमारे। कियायदासी यःश्चेत्रशःश्चेत्रयः स्वायाया । वद्याः वयाः वर्षेदः द्ययः विदः दः द्यूरः श्चर्र् । निर्केश्वर्रावयात्रशास्त्र राजदे स्वयात्रशा । र्वश्ग्रावर्ते । लॅं र्हेग प्रमेय कुराद्या | नरे न उदार् पर्टे प्रशासे राही | हिरादहेंद वराद्रकेराया क्षेत्रपर रेवा।

नेवमासूङ्क रनायावमादी नई आर्डी नमासमा यु नुमासूरमा केंद्र परि

८८.जय.वै.जय.वेशनवर्ग से.इय.शी.ग्रीम क्षू.सेर्दे जयन्यशियाग्री.ग्रीय.ग्रीय वक्षवा रटावी मुवारा गवि रावें दायरा वेंट्र चेर वर्षे या रव कुवाद्या या नर-र्-पार्टर्-पारे-पारे पार्या मार्थि । वर्षे स्वरं प्रे मुद्वर् । सक्षद्रान् न्त्रुपान् हुँ ने न्त्रुप्ते हु स्य नि हु स्य नि है स्य नि है स्य नि है से नि नि स्य ति'न'सै'न'भे'सूत्र के सुझुने'सुझुन्द्व के नि'न के नि'न के नि'न से मुन्न से मुन्न नि'न से मुन्न से मुन्न से मुन्न से मुन्न से मुन्न से मुन्न से न्द्रात्रात्यार्षु अत्यापार्ने इत्रापास्य ने न्द्रात्रु स्त्रा यद्या स्वराधीः नदेव'स'न्दा कें अ'ग्री'नदेव'स'न्दा न्वो'त्र्व ग्री'नदेव'स'न्दा नदेव' यक्तेत्रस्तिः हीत्रः हीत्रा क्ष्म्य स्था ही स्वते स्वतः हुःवाव्यायायायम् प्राचित्रायवे निर्वायायायाः भीत्रायाम् भीवायान् । प्राचीत्रायाम् । ने र्वार्श नुवे निवमहेव हममा नई आर्थे निमनमहमा यु नुमा हिंद पिते ८८.जश्र. देव.स्. कुत्र. वि.स८. बुत्र.चि.च. त्या. कु. दे. ८८.वि.स.स्. जश्र. वि. नदे द्वा श्वर दें न न् ल न या अ अ कें न हे न अ क न हे न क न न दे न अ अ अ दे वटार् भे क्वे सुट केव हा सा ग्रुप्यायदा श्रेट क्ष्यया ग्रीयाय हे ग्यायदे वि यदा ब्रिवे गिन्द ता भे दें दें दें के क्षेत्र हमा या पिन्य सु गुर्म रा प्यय न्त्र या सु हमा ब्रूट-५गर-धें ग्रुट-कुन-अर्केनानी सुना कु उदा निर-५ से नर्से ५ र से वि गणमान्यान्य गर्वेद्या गर्वेद्या सहस्रान्य विष्या हिन्द्र मेन प्रमानिक विषया सर्केगा श्रेवा गार्षेव सहस्रानवगा उवा व्या हिन्दि द्वा से द्वा य्यागिष्ठेश्रास्त्रस्य विवासह्ता व्राम्य व्यापिष्ठ स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्व

श्चेता गर्षेत्र अष्ठ अपविषा अहं ५ पा च अर्थ उ ५ ग्राम से ५ से ५ से निय मदेः भूदे कः स्वाभाउदा हैं हे दे भ्रीया गुरावी मत्वाभायदे श्री में राष्ट्री अम्रेत्राचराष्ट्रः मुग्रायानारुं मीयायळत्यानाम्युन् रदामी मुग्रायाने हुँ यशर्दिन् बेर पर्देश रहा निवानी गावश्वरान के सामानित पर्देश धे·वेशपायायप्रत्याक्त्र्यात्र्व्यात्र्याक्ष्यात्रेष्ट्रयायायात्रेष्ट्रयायात्रेष्ट्रयायात्रेष्ट्रया नः शुन् उत्या दक्षुं नै के विश्वास्य से न्या सुन प्यान सुन या से न्या हुँ प्यश्न दिन ने स्पर्धेश नगर में 'भू से माश्रा स्पर्म सन्दर्भ सा श्रुवः इत्या हिन्द्रस्य श्रीय विष्य दिन्य द्वर प्रमुर दु प्रार्थिया विषय विषय विषय नहनःस्या अ.नहे.चे.स.ल.चे.ि.छे.दी वृयानेनरानभेंना ह्र.हे.युत्राय न्यशन्तु नकुत्र यर कुर् अर्केन्य इसमा अर्धि न्या वर्ष यु नुया श्रु न क्रॅ्रिट-प्रवेर्ट्ट-प्रकार्च्चु प्रकार्देव में केवे क्रॅ्रिट-प्रवास केट क्रुंक ना इसका ग्री: मेर्नाम्यामान्यान्यान्यान्यान्या

मुर्जा क्षेत्र म्या विश्व क्षेत्र न्या क्षेत्र विश्व क्षेत्र व्यक्ष क्षेत्र विष्ठ व्यक्ष क्षेत्र विष्ठ व

खेँ अक्षात्र मानिका है। भिन्न अयाया च्री यो खुक्तुं। वेशह्य मर्वेया खेँ उस् उद्याभासक्र उद्यानि न्वाइन पो सुन्न वेश क्षेत्र हो हिरारे प्रहेत ग्रीयानभ्रीत्राच्ययाधित्यासुःग्रुत्राच्यया यर्केत्रहेत्रस्रास्या युना कें प्ये निक्रु के तुन्य ने प्रहे कि हु न्नु ना कें कि कार्य के ति हु प्ये के र्रे.इ.ल.स्.यं.प्रं.यं.प्रयाष्ट्रश्रुयं क्र्राश्चेहें.यह.ल.यंयं हिंग्याययह. व.चर्चेयाश्रासपु.श्रम्श्राम् श्रास्टाचिटाक्षेत्राश्रीश्रश्रास्टाच्यश्राश्चराच्या यान्वित्रासुःग्रेय। हेःसेन्यस्यापदेःस्रवदन्तस्रस्यापदेःसेस्र उदः वस्र अ रुद् सी माद्र अ रादि सु रद्द त्य अ रद्द अ रदि स रवा सादि वा मी । नर-र्-कुषान-इस्रान्द्रन्य-प्रम्ववायासुम्यास्या वे:व्या-दुःष्य-हेत् वर्ते त्या श्रुव द्वर्या पर्वे त्यो क्षेत्र त्या इस्य हेव वर्ते व्यूट प्राचित पर्वे व मश्रास विवा वी वर र् वह्र पर वत्वाश दश से स्र श्र स्त्र मी र्दे र प्रवा पुःसेन्यासहन्त्या वेशव्यव्याश्यामहेन्द्रिया सुन्सुस यान्युयाञ्चरयाय। विरयाक्त्रयाम् यान्याक्त्रयाम् यान्ययान्य । वर्रे वे व्हेमा हेव प्रो नवे नया ने शप्र रे वें । वे पी हे नर नहेव परे सर्केनार्ना विदेनाहेन्नास्स्र न्यान्य भिराञ्चान्र स् यर्केन्या कियाग्रीन्यायाक्षेत्रम्ययायावी होन्या विने वे वहेगाहेवा न्नो नदे न्या निका महिका मार्थे । न्नो प्रमुद्द मार्थ के अ स्वर् में अ स्वरं में नग्-नेशःध्रुम् । श्रे-५८:ध्रु-५८:ध्रु-अ:धेन् अ:धे-अर्के-५५दे-मदेश । र्केम् श्रे यक्ष्याः स्वार्धे क्षाः प्रतान्त्र विश्वार्थः विश्वर्थः विश्वर्यः विश्वर्ये विश्वर्थः विश्वर्थः विश्वर्थः विश्वर्ये विश्वर्यः विश्वर्ये विश्वर्थः विश्वर्ये विश्वर्य

ने वर्षायक्षय्यादने रायमें वर्षे या सूर्या शुक्षाययायार सुराया हे या यी या के नाह्य राष्ट्री वर ग्रेविष्याचेत्रचेत्रः चेत्र्याच्याचे स्वर्धे स्वर्धे स्वर्थः यात्रेत्रः हित्यो प्रत्याच्या विष्याच्या स्वर्थः भूम अर्केन्यम्बर्यक्र क्रियम्बर्या स्टायुर्यम्यार्थयः नित्रम्यार्थः तुन्यार्थः मृत्रे व्यार्थः वित्र वेरःवर्धेश नर्रानवेःवर्षेरःदरःनडशःसःदरः। गर्वेरःवेरःवस्थाउरः शुन्दरमा सद्वर्रं वेतरी सर्वितरी सर्म्य वेसर्वर संवर्ष द्वरम्य प्रमा शुक्रवहेक्यवमा श्र्वरमानी है। श्रेवरके सुनरमन्तरावयामव्याम् । शुक्रा इ:इम्बर्स्स्याक्ष्र्र्यायावया । इस्यास्य कुयानदे र्वे ज्ञान्य । देव केव विषय र्षेतु-रेयर.सू ।रेयोद.सर्येर.तरूरे.लूच.जूरम.झूरे.कू। क्रिय.तम्म.तस्य. मेन् मीर्यानभूषाने। विकेशनन्यानर्नानर्नास्य सिरोनितन्त्रा विवासित्या नर्न्द्रान्द्रान्द्रा । नर्न्द्रावे नर्न् छे द्रमण द्रार के न्या । भू कुलर्नर्रे नकु हैत ला क्षित्र नर्न्न निष्य हैन अ है निष्य विके नन्गान्नार्से नर्न् भीका निर्देशेन स्वाप्तस्य मानिस्तर्या नर्रानविःशेषानदेःर्रेतःश्चर्रा । भूग्रदेःगर्रे । यः श्रुनशःश्रेर्त्वशान्रें सः ह्य क्षियात्र भूगा मुत्रा विर्मे त्या सदा सदे हिर विर्मे । विर्मे त्या सदा सदे हिर विरम् वर्षेत्रः केत्रः सेत्रायाया श्रूवात्या । सर्केत् श्रुवात्त्रः प्रविदे ह्या प्रयायाया है। भ्रिःसकेन्द्रियास्यविस्यावस्यत्यत्नि। श्रियासःहेदेःस्वासःग्रुसः नग्रामाः सहंदात्रमा । नक्कानिवासे दाराना निरामाः निरामाः निरामाः निरामाः निरामाः निरामाः निरामाः निरामाः निराम

नश्रुवःयश्राध्या । नःश्वः श्रुष्ट्रिः स्थितः निष्ण्याः निष्ण्यः । विश्वः स्थाः निष्ण्यः । विश्वः स्थाः निष्ण्यः स्थाः निष्ण्यः । विश्वः स्थाः निष्ण्यः स्थाः निष्ण्यः स्थाः निष्ण्यः स्थाः निष्ण्यः स्थाः निष्ण्यः स्थाः निष्ण्यः । विश्वः स्थाः निष्ण्यः स्थाः स्था

म्बर्स्या ।

ब्रिट्स स्वर्धा क्रि. संस्था । स्वर्ध्या स्वर्धा ।

ब्रिट्स स्वर्धा क्रि. संस्था । स्वर्ध्या स्वर्ध्या स्वर्ध्या । स्वर्ध्या स्वर्ध्या स्वर्ध्या । स्वर्ध्या स्वर्ध्या । स्वर्ध्य स्वर्ध्या । स्वर्ध्य स्वर्ध्य स्वर्ध्य । स्वर्ध्य स्वर्ध्य स्वर्ध्य । स्वर्ध्य स्वर्ध्य स्वर्ध्य । स्वर्ध्य स्वर्ध्य स्वर्ध्य स्वर्ध्य । स्वर्ध्य स्वर्ध्य स्वर्ध्य स्वर्ध्य । स्वर्ध्य स्वर्ध्य स्वर्ध्य स्वर्ध्य स्वर्ध्य स्वर्ध्य स्वर्ध्य स्वर्ध्य स्वर्ध्य । स्वर्ध्य स्वर्य स्वर्ध्य स्वर्ध्य स्वर्ध्य स्वर्ध्य स्वर्ध्य स्वर्ध्य स्वर्ध्य स्वर्ध्य स्वर्य स्वर्ध्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्ध्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्ध्य स्वर्य स्वर्यं स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्

यव्यामास्याम्बर्धानाते। श्रीः स्थानत्त्त्त्यामास्याप्तिम् वित्राप्तिम् वित्रापतिम् वित्राप्तिम् वित्राप्तिम्तिम् वित्राप्तिम् वित्राप्तिम् वित्राप्तिम् वित्राप्तिम् वित्राप्

स्राय्या त्राया त्राया प्राया प्राया विष्ण वर्षेत्र प्राया वर्येत्र प्राया वर्षेत्र प्राया वर्षेत्र प्राया वर्षेत्र प्राया वर्येत्र प्राया वर्येत्र प्राया वर्येत्र प्राया वर्येत्र प्राया वर्येत्र प्राया वर्येत्र प

ग्रै। कुः अर्के भू:तुरः विष्यः नवे अर्के दः भेव दि । पादः गृवे कुवः क्ष्र-दिनन्य प्रते विनय नर्य विन्ता । विन्ति विष्युः स्वीय निन्ते ये हिन ८८। । १५८ श्वेत त्र अधियः वारः नवे न १५८ श्वे ४ ५८। । ४० व्यवसः स्टरः <u> ५८२'नवे'सर'से'५८। |ग्रेग'रुर'दे'नबर'वग्रे५'सवे'दे'ळन'५८। |र्रे</u> व्यास्त्रस्य स्वारा प्रति विया वया न्या । इस स्वर स्वार् वि वि । व्या स्व क्रियायाया । वर्त्रविष्टिर्द्रिर्द्रवर्ष्ट्रवर्ष्ट्रविष्टियायायाय । विवासी । श्च-श्वन-५८। । ५-१ नश्चर-ध्वनश्चन इर-५ व्यक्ष श्वन्दि । क्वन-५८। । विन्देवान्से व्याध्वापदेवयावयाद्या ।रेवावायरेवायक्रीदायदेवीयायह्या नर्रानि विक्रान्ति न्या निर्देश के स्था कि स्था निर्देश के स्था के स्था कि स्था कि स्था कि स्था कि स्था कि स्थ नद्वन्यें क्विंन्रें न्त्र । भ्रान्यें ह्यकें मान्यमान्यें वरेव केव नत्व। । चग्र-वेश-वार्वाश-दर-क्रियासळ्य-वाधशायितादर। वाशेर-४-द्रययः ने तु नु अ न महा नु अ अ विवय महित महित मा कि अ हिन अ दिर हु अ । नर्रःचले पर्दिरःदरः नरुषा परिः स्वीया याप्त्येया विषायाप्तव स्यमास्या

नेव्यानकु नविवेधक्रें मह्याह्यया विव्यक्षिया नेव्यानक्ष्या विष्ण क्ष्या नेव्यानक्ष्य विव्यक्ष्य क्ष्या क्य

हे शुर्ह हे अया मान दि सुद्ध औं अर्थ ही हे दू यह औं अर्गू रे सु दि सह इन्दु। क्र. २.२.इ.२.६.७१६.शड्डे.क्र.२.४२.लइ.४.इ.५.४५ नन्गामी नगरा रादे क्रिन्य निर्मेश । निर्मेषिय मिन्य रादे हित क्रिन्य ५८। क्रिंश ग्री ५ विट्रा ग्री क्रिंग सम्मा ग्री विस्माम ग्री गर् नससस्याम् । वित्राम्यस्य उत् के देवास्यम् । विवास्य से द्राम्य त्रचूर सुर हेग विश्वस्याश्वर स्वाम कुर्न स्वाम स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्य स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्थ स्वर्य स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर्य स्वर्थ स्वर्य स्वर বক্ত ইনি ব'মঃ শ'মঙ্কু'ব্রন্ ক্ল'ব্লী ব'মঃ শব্দ দ্বি'বা দি জেঁ শ इ'र'श्रे'इ'र'र्द्रु। बेशमंदेर्म्याशस्त्रहेर्याहेयायीशस्त्रें र्प्त्युदेर्कुः सर्वे स्टीत्र ग्रीयानक्षत्रया भ्रानत्राया ग्रेन्त्रया नेवीवायानेवायास्वायानक्षत्र । वार्त्वानेवायास्वया नकु:इवा:इ। र्क्के:वर्ष:वर्क्कवा:वर्त्वनकु:हे:स्व। वर:रेवाश:वर्वे:वकु:इवविर:वर्क्क्ष्यवश अर्क्न अंग्राम्यम् अर्केन्द्रम्य विद्वेत् यस वर्षेया वर्षे

त्रैं। अन्तर्र्त्याम् वित्रान्तरः क्रियानये क्रियान्य क्रियान्य वित्राय क्रिया वित्राय क्रिय क्

केन सेंदे अशु क्रेंनश ग्रेश | ने सेंट कु क्रें र खेन नन्यायी । अर्केन क्रेन नक्क निवेदे सुन्दि वेदिया । सुन्दि वेदियाया स्वन्दि सेवा । स्वन्दिः ब्रियायामितायी निर्मेता विर्मेतायी निर्मेतायी निर्मेताया के यी निर्मेता विरायी । नश्चर्यासूरायरे वेर्षा । वर्षेयापरिवान हैं ना हैं श्रीर वा विन से र्यापरशावयायावराष्ट्रायुदे र्श्वेट् इस्यश्रा । पळे सेट् यर्ट् हेदे यहुट नः सर्हे सूरः नश्चेषा । नवदः द्रः नउदः नः रे र नः सूर्यः सूर्या । नर्गे द सहेशःभिवानमुन्यतिमित्रस्य मित्रस्य मित्रस्य मित्रस्य मित्रस्य स्थिति । विश्वति स्वति स्वति स्वति स्वति स्वति स ८८.चडरा.ज.चरीजा । शूर्र्स्याया.लुया.चेया.क्ष्या.ची.क्ष्या.ची.सी । चर्च्या. विवास्त्रित्याः सेत्रस्तिः भू भू निवास्त्र गुर्वे स्वास्त्र स्वास् गुर्देग विश्ववर्द्दा देवशस्त्रस्थे वकुर्ये देप्तार्वेद्वी स्वाशकेर विवासीश्वर सर्वेद सुत्रामा सेवा विट रहें त्र सेंट्र सामदे गारु गा सुना विषय मास्त्र सात्र **ण**र्से से ग्रामा से साम सिन्दा स्वाप से स यशनर्डेष'नदी

श्री ह्रेंब्र ह्रेंब्र हे । ह्रिंब्र ह्रेंट्य स्थान हिंद्य ह्रेंब्र ह्रेंव्र ह्रेंव्र ह्रेंव्र ह्रेंव्र ह्रेंब्र ह्रेंव्र ह्रेंव्र ह्रेंव्र ह्रेंव्र ह्रेंव्र ह्रेंव्र ह्रेंव्य ह्रेंव्र ह्रेंव्य ह्रेंव्य ह्रेंव्र ह्रेंव्र ह्रेंव्र ह्रेंव्य ह्य ह्रेंव्य ह्

यश्रभावा श्रिक्षं अव्यक्ष्य में विद्या विद्ये त्या वि

क्रीयानि विक्री स्वर्गानित्ति के निर्माणका विन्तुयार्थे सर्वेत्ति विक्रा स्वर्गानित्ति स्वर्गानित्ति विक्रा स्वर्गानित्ति स्वर्गानिति स्वर्णिति स्वर्गानिति स्वर्य

क्ष्मा डिश्चाईमा विक्षा स्थान स्था

श्रीयात्री | सिरासृतुः यर्थे सुमान्त्रास्त्री | स्वीयात्राः साम्रान्त्राः साम्रान्त्यः साम्रान्त्राः साम्रान्त्रः साम्रान्त्राः साम्रान्त्रः साम्रान्त्रः साम्रान्त्रः साम्रान्त्रः साम्रान्त्रः साम्

या त्रिन्दि । विन्निन्दि । विन्निन्दि । विनेत्र प्रकेत । विनेत्र वि

क्ष्मी विक्रान्त्र स्वाप्त विक्रान्त्र स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त

देवसप्येद्यस्य विश्वस्य विश्व विष्य विश्व विश्य

श्चेन'रा'इय'नवे'श्चुट्य'रादे'श्चेम् ।क्रिय'न्ट'श्चेन'रादे'यय'नश्चेय'र्या सर्केन्यानि ने ने निर्मेद सर्केना ना शुर्मा । सर्केन् प्येद सम् से विया वर्षा र्रोग्या विर्युत्वस्थाये नेयार्क्षेत्रस्य स्वायायायाते। विवासेत्या स्वीताद्रः नेयान्ते भूग भिगमा इसमाहेया भुम्यामध्या भूमान्त्र हें तर्स्य नर्रायमा विष्यः कवामार्श्वेवाः सुरादर्गः नर्शे मारामा विषयः कवामाः इसः श्चैव नर्र प्यायम् । श्वि के मुयान दे निव का नरा । यह र श्वेव मुन्यित्रिरविर्वे नर्षे अयथ। । नः व्राचित्र वन्या वित्र वन्या वित्र वन्या वि श्रे अधुव मुेव म्रथ्य न ह्रिया शिव ५८ र शे या ४८ दे अदे रहे या था । हिंदा था यिष्ठेशः यश्याश्रास्य र्याः सर्वेत्। । यत्तः ग्रीः याँ स्तिः यत्तः छेतः यविदे।। नरःळन्रशेषाचेन्यकुःनवेश्वे । अर्केन्श्वे वार्नेर्यादनेश्वे वायशा । नर्रः केवः नवे में रनः हुः शेषा विर्णे गर्डे में पर्श्यानवे विर्मारम इस्रान्नि विद्यापार्यस्य । या ब्रम्सर्गे सुरार्से विद्याप्य होता । प्रान्से क्रम्भारावे मान्या श्री । वियोग्या श्री मार्चे में मिन् के निवा । वर ळ८.भुव.४स्थर्भ.भू.चेर. नेरा १८.८या.सकूर.भूव.चम्.चब्र.ला १कू.यास. गर्वेर होर सेय नर होरा विर्मेर नरम विर्मेर मासे हैं सा विर्मेर सदे ग्राञ्चन्य उत्र हिट वहें त्र भ्रीया । नयदयः विट भ्रीतः भ्रीयः पञ्चनयः त्या श्रा नत्नः केत्रानिः यान्यें यात्रयाते। । यम्। निर्देशम् मे यान्ये यान्ये यान्ये यान्ये यान्ये यान्ये यान्ये यान्ये धर्यस्त्र

चैश्वर्याचीश्वर्यत्यिक्त्रम्य अर्थः प्राच्याचीश्वर्यत्यिक्त्रम्य अर्थः प्राच्याचीश्वर्यत्यिक्त्रम्य अर्थः प्राच्याचीश्वर्यत्यिक्त्रम्य अर्थः प्राच्याचीश्वर्यत्या विश्वर्यात्याचीश्वर्यात्याचीश्वर्यात्याः प्राच्याः प्राचः प्राच्याः प्राच्याः प्राच्याः प्राच्याः प्राच

ये। वर्गेन्सहेशन्न्यः भृतियाक्ष्यः वर्षः वर्षः

क्री नर्डे अध्वर्ष्व पृष्ण व्यवस्थि विद्य क्षिय क्ष्य क्ष्य न्य क्ष्य क्य क्ष्य क्ष

नर्हेर्यने हैं। त्रायापयः समयः परा ही सकेरायान्यान्याने नर्रिं क्षेत्राया विवायक्ष्यः सक्रिं केर नर्वा वी सान्हें र पर नही। इस्नेश्रास्त्रवाध्यास्त्रें सकेन्यान्यान्यान्त्रा विर्मेत्राम्यान्ये स्र-र्सिया । न्न-निश्च स्रिन्य स्र्निय स्रिन्य वळवासळॅन्छेन्यन्याची यानक्षेत्यम्यन्त्री। छिष्यम्सेन्यवे क्रीया यान्यस्थित्। विद्यान्त्रान्त्र्ये विद्यान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रान्त्रा धर नश्ची । विष्ट सेव सेट सेव से सकेट वा पाव राजिया । वर्शे न गुव शी वर् होर स्टार्स या । द्वर वश्च र स्वित्र व्रक्ष वर्ष वर्ष वर्ष वर्ष या । ध्रमायक्या सर्केन केन मन्त्रमा मी श्राम्ब्रेन सम्मि । मन्त्र मिले वे वर्षेर-र्-वार्रेवार्य-रिकेवार्य-इसर्याया । सर्केर-श्चेत्र-वार्रेर-स्मु-केत् वर्रे सुव्य नश्रा । यार्के र र र यार्या सवे वर्षे न या्तर वे तश्रा । यर् र र विदे न्यायश्राह्या प्रम्या म्याया विदान क्ष्या विदान क्षय विदान विटा नभुषायहँगाभ्रमशयदेरमाविः मन्यामहँरसास्या

रेविश्वात्वेश्वात्वेर्यात्वे अर्थे प्रश्नात्वेष्य क्षेत्र विश्वात्वेष्य विश्वात्व विश्वात्वेष्य विश्वात्य विष्य विष्य विश्वात्वेष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य व

मश्याचीयावश्या स्थान्त्राचीयावश्या क्राया मिल्या स्थान्त्राची स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य

हुँ। दर्व द्रम्य केवर हेर गा दिने वि वर्त्रेव नवोग्र वर्षे म्याप्तर्या । द्वे म्यायर केव ग्रव द्ये नद्या । व्यास गिलेवाहे अर्थे दिया गिवयदिय के अर्थ गिवेद है वर्ष । शिव रें प्लावाय श्रेमश्रामा । मारान्मानमोग्रास्त्रेन्स्यायरास्त्रा । वित्रास्य मन्त्रानित्रः क्ष्यायात्रम्ययात्रा । देव केव यह याये दर सुद पदी । पर्वा वव देव केव रायदी। र्ष्यायादरानेरायहेवास्याम् ध्येया । वसायविः विस्यायादाने क्रमश्रम् । नन्मारमा क्रुः श्रें र प्यें न नम्मा । सुन न न निरे । क्र्यायात्वया श्रिः यहेयायदे दरम् मुन्स्व विवादि । इयार्ष्य प्रमु वर्चन हें र सर स्वा अन्य श्रास्त्र केंचा राजा वित्ता हिता । विता सेंदि हे यश्रमुयान्त्रेत्या दिवायद्वेत्रस्वाश्रयकरान्त्वारुवाद्वा क्रिक्ट्रेर थॅवनन्यासून्द्रव्या दिवक्वेवसहेशसदेन्द्रस्तुन्द्री । थॅवन्त्र नमुः धनान्द्रः धूनः विद्रा विद्रान्दे व्यव निर्मा विद्रानित । विद्रानित विद्रानित । विद्रानित विद्रानित । सूरे सूर रें उदा अर्गे या ने से त्यदान न न स्त्री सि हे न न न स्त्रा स्त्र चुर्या विराधराभ्रेगातासराग्चीस्यूर्या विमूर्यतिस्याप्रस्पर

व्यामा । नग्रमा अन्दर्भ नुदर्भे प्यायाया । मासुदरभ्रम द्या स्रुव हे से से । मट्याबद्याद्यायाययात्या विष्यावबद्यावबद्ध्ययाये सूनमा दिव केव सह मार्य कुव की मार्च मार्य साम मेर वे हिर वी वर्ग्नेश विश्वराच्या श्रीया प्रमाणिया विद्या ल्या । क्रे. श्रूचा न न वा श्राया श्रुया यही त्या ल्या । न न न स्या श्रूप्य वही त्या ल्या । निस्रशक्तेत्र नर्हे नर्हे न्यरे न्य पेन्। भ्रि सकेन नर्हे निहेश नर्हे न्य किन। श्चाना अप्रभादर पहुँ अ अद्रस्य उत्र वित्र मार्थे न र से मार्थे । इसमा । नन्या स्या कु क्वें र पें व नन्या यो । सुन न् नन्न निवेदे कें या माया वर्षा विरक्षिया सहित्र सहित्र स्थान शुन्नवेश। १३ व स्वायं प्रत्यास्त्र प्रमानवेश। विक्वः स्वाः प्रवः न्तर स्वः यदी अि.जश्रासक्र्याः शुराहर स्त्रीतः वदी दिवाशः स्वाशः वक्षतः ना निवा डगान्दा । कुः श्रुराधेवाननगासुनानुष्या । श्रेष्यशसुनानगदसुना नवेशया । नर्र नवेदे गर्दे र मंदे र सहित्। । न बुर न वेद य न केर यःब्रिया विष्यायायहर्गाव्यादे स्रिया विष्यायययात् विद्यासूना विद र् रुंद्र न् रुद्र मियार्रेद्र । नर्द्र मिलेदे द्रम्यार्स्य म् रा नर्र्ःग्रेःवियापार्ग्यायात्रश्चरा । कुषारेविःश्चें पर्वेषायार्ग्यायात्रश्चरा । वेतु:रूटाश्चे:मु:द्याःवःनश्चुर्ग ।र्से:तुरःनश्चुट्रःसःमठिमःनर्ह्मेमे ।योः वर्रेग्'श्रुअ'नमु'र्ग्यु'र्ज्जेग् |नवे'नमु'स'नवेदे'त्र्र्त्रअअ'नर्ज्जेग ।र्रेट्र

स्वा निर्मा द्वी । विर्मा प्रत्या प्रस्थ प्रस्थ । विर्मा प्रम् । विर्मा प्रस्थ प्रस्थ । विर्मा प्रस्थ प्रम्भ प्रस्थ । विर्मा प्रस्थ । विर्मा प्रस्थ प्रस्थ । विर्मा प्रस्थ । विर्म प्रस्थ । विर्मा प्रस्थ । विर्म प्रस्

ने त्र भाग भूमा गर्भे प्रत्ये प्रत्ये

क्रमश्रीय। प्रश्नित्रं स्वर्णम् स्वर्णम्यस्यम् स्वर्णम् स्वर्णम्यस्यम्यस्वर्णम् स्वर्णम् स्वर्णम् स्वर्णम् स्वर्णम् स्वर्णम् स्व

यद्धा । श्रि.यद्धाः प्रति । यद्धाः प्रति । श्रि.यद्धाः प्रति । श्रि.यद्धाः प्रति । यद्धाः प्रति

मह्रम्भ क्ष्रिया क्ष्रिया वित्राचित्र विश्व क्ष्रिया वित्र विश्व क्ष्रिया वित्र विश्व क्ष्रिया वित्र विश्व क्ष्रिया वित्र विष्ठ क्ष्रिया वित्र विश्व क्ष्र विश्व क्ष्रिय क्ष्रिय वित्र विश्व क्ष्रिय क्ष्रिय वित्र विश्व क्ष्रिय क

 इं अनुः अप्तारि सुः र अर्बुः य निर्द्धः दुः युन्ता वेयम्बर्ग निर्देशः वर्षे क्षावियाने य म्यायाधियास्यानान्ता नेत्रयानभूतायार्थेन्तायत्रेयात्रार्थेते स्वायाययायात्रा थे ने इसु'रा'त्य'रा'री'सु'र'श्वामाग्रीमावनुवा धीन्यार्ह्यम्भूरावान्यार्ह्यन्या सर्वेति र्रे मुर्गरा हे के थ्व रा विश्वर्गम् क्षूम्म महिम महिम्स स्क्रिम विश्वर्भम्य न्ना नर्डेस'यून'यन्स'वेस'र्सेन्स'ग्रेस'नर्स्ना क्रेंद्र'यस'त्रा धेना'नक्त्रस्या'कन्नम्। यार प्यर यद्या क्रिं बेश श्रें मशद्दा अ क्रें द्र प्यें द्र श्रें बेश श्रें मशद्दा स्वाप ८८१ विश्वस्थान में प्राप्त में श्रेंग्रथं राष्ट्रे अहश्रः क्रुशं द्वारा क्षुत्रः श्रे अश्वाद्या राष्ट्रः व्याप्या श्रायदेः न्वेरिशक्षाम्बर्धा हिन्द्रस्यरायासहित्रमदेखे जेरान हे नदे श्रम्य हे भुँचर्यायदे त्रास्त्र प्रस्य म्या मी से विचाय सम्दर्य या या या या या या निवा র্মিবামারমামারির মহার দেশের মার্মার মৌমার মার্মারর হারমার হর শ্রীর শ্রীর गिहेश ग्रुट रें ग्रिश मित्र हिंग्या ह्यूर र्वे यह सार्य या नित्र हे ग्रिने रेंगे में विस्तर के विदेशित या में नासर सहत द्वारी या द्वी ना विदेशी मान इयाद्याप्तरायरार्थाः अवस्त्रा ह्यायार्थे वार्यात्रा द्यो प्राप्तरे प्राप्ति हो। र्वश्वस्थाः उत्त्र । श्रिवाश्वरः । स्वाः वर्ष्यः वः प्रतः श्रिवाः वर्ष्यः इस्राधर र्वेष्य प्रदा नक्ष्र प्रदे प्रया गुरु र्वेष्य पर्वे प्रवे प्रया नक्ष्य भूव गरिया श्रा विश्व वश्या धुव ने र मावश शुर रिया

श्रुव इत्यायदे पो भी या स्याप्त स्याप

र्यो येग्र प्रसेया। नगः विशा ॥